PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES Vol 1, Issue 1

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में स्त्री की नियती और अस्मिता

श्री जाधवर धनराज संदिपान
शोधार्थी
हिंदी भाषा एवं साहित्य अनुसन्धान केंद्र
महात्मा बसवेश्वर महाविद्यालय लातूर ४१३५७२

महिला उपन्यासकारों ने बदलते जीवन सन्दर्भ में नारी मन की संघर्शषीलता मानसिकता, संबंन्धों के तनाव से उपतजी वेदना और अपनी स्वतन्त्र सत्ता के निर्माण के लिए जिम्मेदारियों को स्वीकार किया है। अपनी जीवन यात्रा को संकल्पित मन से गतिषील रहनेवाली नारियों के मन को गहराई और व्यक्तित्व की जटिलता को कलात्मक सजगता से उन्होंने अंकित किया है। उशा प्रियंवदाजी में यह सषक्त रुप में दिखाई पड़ती है। उनका आधुनिक बोध संयत और तीव्र है। वह नारी स्वातन्त्रय की पक्षधर है। उनके 'रुकोगी नहीं राधिका' में भारतीय नारी जीवन में सुरक्षा की आकॉक्षा दर्षायी गयी है। 'प्रतिध्वनियॉ' नामक कहानी में विवाह एक निरर्थक रस्म बतायी गयी है। 'वापसी' परम्परागत मूल्यों की पराजय की कहानी है। यह कहानी मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद का उत्तम नमूना है। उनकी कथाऍ नगर जीवन के तनाव और सम्बन्धों के बदलते स्वरुप प्रस्तुत करती है।

उशा प्रियंवदाजी की रचनाओं में स्वातंन्र्योत्तर हिन्दी साहित्य की सभी प्रवृत्तियॉ सम्मिलित हैं। उनकी 'एक कोई दूसरा' नामक कहानी में ईष्वर के प्रति वितृश्णा और विक्षोभ दृश्टिगोचन है। 'चॉदनी में बर्फ पर', में सार्त्र की स्वतंत्रता विशयक धारणा का प्रत्यक्ष प्रभाव है। 'पूर्ति', 'कोई नहीं', 'सागर पार का संगीत' नामक कहानियों में क्षण के महत्व को संबन्धित प्रसंग हैं। 'छुट्टी का दिन' कहानी की माया सहगल का जीवन आत्मपीड़ावादी तथ्य को प्रतिपादित करता है। 'चॉद चलता रहा' कहानी में मृत्यु बोध के अनेक दार्षनिक स्थल भरे पडे हैं। उशा प्रियंवदाजी की कथाऍअ आधुनिकता की प्रवृत्तियों का सटीक उदाहरण हैं। उनकी अधिकॉष कथाओं में पष्चिमी परिवेष का व्यापक और सजीव चित्रण मिलता है। उनके पात्र अर्न्तराश्ट्रीय चेतना के प्रतिनिधि है। वे किसी एक जाति, धर्म या देष की सीमा से बंधे हुए नहीं है। कुंठा, संत्रास, यौन चित्रण, अजनबीपन, पष्चिमीकरण, वैज्ञानिक बोध, अन्तर्राश्ट्रीय रुचि आदि का चित्रण अनेक कथाओं में मिलता है। उन्होंने आधुनिक बोध से उत्पन्न मूल्य चेतना को अपनी कथाओं में व्यक्त किया है।

उशाजी की कहानियॉ नगर जीवन के तनाव और संबन्धों के बदलते स्वरुप प्रस्तुत करती हैं। उनकी कथाऍअ पेक्षा के दुख से तपे, एकरस जीवन की उब से पीड़ित तथा सूने जीवन की पीड़ा सहते और वैयक्तिक स्तर पर अव्यवस्थित और मिसफिट होने का अनुभव करते नारी–पुरुश पात्रों की अभिव्यक्ति है। पष्चिमी संस्कृति के अनेक तत्वों का प्रतिपादन उशा प्रियंवदाजी के उपन्यासों में हुआ है। कौटुम्बिक ढ़ॉचे का षैथिल्य, 'प्लू ब्वाय' संबन्ध, पत्नियों को बदलना, स्त्रियों को मदिरापान और धूम्रपान आदि

इसके उदाहरण हैं। लेखिका ने सभी रचनाओं में जीवन की विसंगतियों, एकाकीपन, षून्यता, व्यथा, पीड़ा और अजनबीपन का अनूठा वर्णन किया है।

उशाजी की अधिकॉष कथाओं में आधुनिक यूरोपीय जीवन की झॉकियॉ प्रतिफलित हैं। पष्चिमी संस्कृति और जीवन मूल्यों के समग्र चित्र को प्रस्तुत कर उनकी तुलना में भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों को उदात और उत्कृश्ट मानना उनका लक्ष्य था। पष्चिमी संस्कृति की हवा लग जाने पर होनेवाले दुश्परिणामों का पर्दाफाष 'रुकोगी नहीं राधिका' नामक उपन्यास में हुआ है। समीक्षम सुरेष सिन्हा का विचार है ''भारतीयता तथा आधुनिकता के बीच किसी सेंड़विच की तरह जीनेवाली नारी की नियती का कोई आभास न तो राधिका के चरित्र के माध्यम से मिलता है और न चिंतन के धरातल पर उसका कोई संकेत ही प्राप्त होता है।'' पष्चिम का जीवन एकदम यॉत्रिक बन गया है। मानवीय संबंध भी मषीनी संबंध के रुप में परिणत होते हैं। उनका जीवन एक ढंग से षराबमय है।

अमेरिका की षिक्षा प्रणाली, पुस्तकालयों का संचालन, होटलों के रिवाज़, युवक–युवतियों के विवाह, सुखमय जीवन, धार्मिक दृश्टिकोण, नाइट क्लब के कार्यक्रम, मदिरापान इन सब पहलुओं को समझने में उशाजी का कथा साहित्य काफी लाभदायक है। अमेरिका में 'डेटिंग' एक आम रिवाज़ है। मॉ–बॉप चाहते हैं कि उनकी लड़की बहुत से नव युवकों के साथ डेटिंग करें। षादी के क्षेत्र में युवक–युवतियों को आत्मनिर्माण का हक है। आत्मनिर्भरता अमेरिकी समाज की एक विषेशण है। लड़के–लड़कियॉ अपने जीवन निर्वाह के लिए मॉ–बॉप पर निर्भर नहीं रहते, वे खुद कमाते हैं और खुद पढ़ाई का खर्च चलाते हैं। लड़की अलग कमाती है और लड़का अलग। पष्चिम में स्त्री और पुरुश दो अलग इकाइयॉ हैं। उशाजी की सभी रचनाऍ स्त्री की नियती और अस्मिता को रेखांकित करती हैं। अतः ये रचनाऍ नारीवाद के उत्तम नमूने हैं।

जीवन में दिखाई पड़नेवाली स्थूल परिस्थितियों, विसंगतियों और अंर्न्तविरोधों को रचनॉतरित करने के साथ, जीवन के सौन्दर्य बोध, व्यक्ति के निजी राग संवेगों और जीवन संदर्भों के सूक्ष्म स्पंदन कथाकारों के वैविध्य पूर्ण फलक में अंकित हुए है। सामाजिक जीवन और परिस्थितियों की यथार्थपरक पड़ताल इसमें समाहित है। भूमंडलीकरण, उदारीकरण, बाज़ारवाद और उपयोक्तावाद वर्तमान समय की प्रमुख विषेशतायें हैं। आज की हिन्दी कथा साहित्य के सामने अत्यंत विशम, असंगत और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का परिदृष्य है। सामयिक परिस्थितियों के दबाव में कहानी की संरचना काफी प्रभावित हुई है। विभिन्न चिंतन धाराओं, मत, वादों और दर्षनों से कलासाहित्य अछूती नहीं रहा है। हर एक वाद या दर्षन के अंतर्गत अपने युग की समग्र दृश्टि का प्रतिबिंब होता है।

संदर्भ :–

1. अभी दिल्ली दूर है, राजेन्द्रयाादव, वाणी प्रकाषन, दिल्ली – प्रथम संस्मरण 1995.
2. अज्ञेय और उनका उपन्यास संसार, डॉ.ब्रम्हदेव मिश्र, लोकभारती प्रकाषन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण – 1992.
3. आधुनिकता के संदर्भ में प्रमुख, महाकाव्यों में नायिका, डॉ.कमलगुप्ता, दीपक पब्लिषर्ज़, जालन्धर, प्रथम संस्करण–1984
4. आधुनिक हिन्दी उपन्यास, डॉ.नरेंन्द्र मोहन, दि मैकमिलन कंपनि आफ इन्डिया–1989.
5. आधुनिक हिन्दी मुक्तक काव्यों में नारी, डॉ.सावित्री डाग, देवनगर प्रकाषन जयपुर, प्रथम संस्करण 1965.
6. उशा प्रियंवदा के कथा साहित्य में व्यक्त नारी चेतना – षारदा बी.पटेल – गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, संस्करण 2008.
7. कथाकार उशा प्रियंवदा – डॉ.सुभाश पवार – विद्या प्रकाषन, कानपूर–22, प्रथम संस्करण 2010.